नाम — मनस्वी त्रिपाठी

मो0नं0 — 9170088024

सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में युवाओं की भूमिका

रूपरेखा–

1. भूमिका
2. सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में भारतीय युवाओं की भूमिका
    1. राजनीति के क्षेत्र में
    2. विज्ञान व प्रौद्योगिकी क्षेत्र में
    3. सिविल सेवा में
    4. शिक्षा क्षेत्र में
    5. खेल जगत में
    6. निष्कर्ष

भूमिका–

गरीबी को दूर करने असमानता को कम करने और 2030 तक अधिक शांतिपूर्ण समृद्धि समाज को बनाने के लिए 2015 मैं सभी संयुक्त राष्ट्र सदस्य राज्यों द्वारा 17 सतत विकास के लक्ष्यों को अपनाया गया जो विश्व स्तर पर सशक्त बनाने के लिए है युवाओं के मस्तिष्क मैंक्ळ का निवेश एक न्याय संगत लक्ष्य हासिल करना है और अस्थाई मानव जीवन जीकर शिक्षा के माध्यम से दूसरों को बढ़ावा देना है। 36 मिलियन 10 से 24 वर्ष के बच्चों के साथ भारत विश्व में युवाओं का सबसे अधिक आबादी वाला देश है इस विशाल बिग्रेड क्षमता को कभी महसूस किया जा सकता है जब प्रत्येक वर्ग के लोग अपनी क्षमता से पूर्ण योगदान दे भारत में लगभग सभी समस्या का एकमात्र हल शिक्षा है जनता तक शिक्षा तभी पहुंचाई जा सकती है जब उन्हें शिक्षा से प्राप्त लाभों से अवगत कराया जाए जरूरतमंद को शिक्षा प्रदान करने के लिए भारत को एक स्थाई व्यवसाय मॉडल की आवश्यकता है कर्मचारियों के लिए हर एक टीच वन जैसी पहल को 06 महीनों के लिए अनिवार्य किया जाना चाहिए।

सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में भारतीय युवाओं की भूमिका–

राजनीतिक क्षेत्र में–

राजनेताओं के रूप में युवाओं को भारत में जिस तरह से राजनीति माना जाता है उससे प्रभावित होना चाहिए मनरेगा ग्रामीण विद्युतीकरण परियोजना जैसी बुनियादी सरकार परियोजना को सुनिश्चित करने से महत्वपूर्ण विधेयकों जैसे महिला प्रतिनिधित्व

विधेयक लोकपाल विधेयक सड़क सुरक्षा विधायकों को अपने निर्वाचन क्षेत्र में सार्वजनिक धन को उचित खर्च में सुनिश्चित करने से पारित किया जाना चाहिए यह राजनेता युवाओं के बदलाव में बहुत जिम्मेदार होता है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में–

CSR कार्यों में कार्यरत युवा प्रबंधकों को अपनी CSR गतिविधियों के प्रभाव के निरीक्षण करना चाहिए कि वह किस हद तक समाज में बदलाव ला रहा है शिक्षा व कल्याण के मामले में भारतीय युवा आबादी का शेष 20प्रतिशत् को 80 प्रतिशत् आबादी में बदलाव की पहल करने वाला होना चाहिए अकेले सरकार बुनियादी ढांचे में सुधार का बोझ नहीं उठा सकती है जैसे शैक्षिक संस्थान अस्पताल खोलना सड़क सुरक्षा या निर्माण बिजली संयंत्र आदि यदि प्रत्येक बहुराष्ट्रीय कंपनी एक शैक्षणिक संस्थान खोलती है और विश्व स्तर पर सुविधाओं के साथ एक अस्पताल को वित्त पोषण करती है तो परिवर्तन दूर नहीं है भारत में लगभग हर समस्याओं का जड़ भ्रष्टाचार है।

सिविल सेवा में–

सिविल सेवकों के रूप में युवा जमीनी स्तर पर विकास कार्य को क्रियान्वित करती है यदि प्रत्येक प्रखंड विकास अधिकारी यह सुनिश्चित करता है कि उसके प्रखंड में कार्य का निष्पादन उचित है यदि प्रत्येक जिला कलेक्टर अपने अधीन पुलिस बल के साथ अपने क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाए रखता है यदि लोक निर्माण विभाग अधिकारी सुनिश्चित निवारण करता है तो परिवर्तन दूर नहीं और शिकायतों का शहर गांव कस्बे और शहर एक अनछुई करके समृद्धि होंगे।

शिक्षा क्षेत्र में–

शिक्षाविदों के रूप में युवा प्रोफेसरों शिक्षकों और शोधकर्ताओं का गठन करते हैं भारत ने बच्चों को आज समाज में अपनी भूमिका के प्रति संवेदनशीलता की आवश्यकता है शिक्षकों को अन्य लोगों के प्रति सम्मान करना सही मूल्य पर टिके रहना और प्राकृति समस्याओं की नैतिक शिक्षा देनी चाहिए भारत एक बहु जातीय बहुत धार्मिक और एक बहुभाषयी देश है यहां के लोग इससे होने वाले समस्याओं के प्रति संवेदनशील हैं भारत में बच्चों को प्रत्येक समुदाय के विभिन्न जातियों के पहचानो और उनका सम्मान एवं महत्त्व करने को सिखाया जाना चाहिए।

खेल जगत में–

खिलाड़ियों के रूप में युवा जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय चौंपियनशिप मैं भारत के लिए गौरव हासिल किया है उन्हें दूसरों को प्रेरित करना चाहिए।

निष्कर्ष–

जिम्मेदार नागरिक के रूप में भारतीय युवा हर उस भूमिका के क्षेत्र में हैं जिन्हें निभाने की जरूरत है।